उधार का अनन्त आकाश

लेखक परिचय :

शरद जोशी

जीवन की विसंगतियों पर करारा प्रहार करते व्यंग्य-कार समाज को सही दिशा देते हैं। वे अपने लाक्षणिक तेवर से यथार्थ का साक्षात्कार कराते जीवन-बोध देते हैं। शरद जोशी ऐसे ही व्यंग्यकार हैं।

शरद जोशी का जन्म 21 मई सन् 1937 को उज्जैन (म.प्र.) में हुआ था आप होल्कर कॉलेज इन्दौर से बी.ए. करने के उपरांत स्वतंत्र लेखन करने लगे। आप नईदुनिया, नवभारत टाइम्स के नियमित लेखक रहे।

परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, तिलिस्म, रहा किनारे बैठ, दूसरी सतह, इन दिनों, इनके व्यंग्य संग्रह हैं। 'अंधों का हाथी' व 'एक था गधा' नाटक भी इन्होंने लिखे।

शरद जोशी की भाषा चुटीली व मुहावरेदार है। वे अपनी सहज भाषा में सामाजिक विसंगतियों पर तीखे प्रहार करते हैं। इनके व्यंग्य केवल हँसाते ही नहीं हैं, वरन् कुछ सोचने को भी विवश कर देते हैं।

हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकारों में इनका विशिष्ट स्थान है। बाद के व्यंग्यकारों ने इनकी परम्परा को ही आगे बढ़ाया है।

आज हमारे समाज में ऐसे कई लोग हैं जो परिश्रम से बचते हैं और उधार लेकर अपना काम चलाते हैं। एक बार उधार लेकर वे चुकाने का नाम नहीं लेते। लेखक ने समाज के ऐसे ही लोगों की मानसिकता पर अपनी चुटीली व्यंग्य शैली में जमकर प्रहार किया है।

उधार लेना एक कला है और उसे नहीं लौटाना उससे बड़ी कला है। इनमें परस्पर बी.ए.-एम. ए. का संबंध है यानी जो बी. ए. करता है फिर एम.ए. कर ही लेता है। जो उधार लेता है वह धीरे धीरे उसे नहीं लौटाना भी सीख जाता है। एक साधना है, जो सिद्ध हुआ उसका जीवन सफल है। सतत् प्रयास, सूझबूझ, धैर्य, मधुरभाषण और अध्यवसाय से आदमी उधार लेने और न लौटाने में कुशल हो जाता है। सभ्यता का विकास परस्पर उधार की कहानी है। पशु एक -दूसरे से उधार नहीं लेते ।

उधार के मूल में गहरा दर्शन है। क्या है मैं नहीं कह सकता। पर है। जो गुण हमारे निजी और राष्ट्रीय जीवन की विशेषता हो गयी है, उसके मूल में जरूर कोई दर्शन होगा । उधार लेना ही मनुष्य की आशावादिता का प्रमाण है जो जीवन से निराश है वह तो आत्म हत्या करेगा, पर जो आस्था रखता है वह उधार .....उधार पर टिका हुआ है।

मानव जाति दो भागों में बँटी है वे जो उधार देते हैंऔर वे जो उधार लेते हैं । मनुष्य और मनुष्य के बीच सारी बड़ी-छोटी खाइयाँ उधार के छोटे-मोटे पुलों से बँधी हैं। जब ये पुल टूट जाएँगे, आदमी अकेला हो जाएगा । उधार लेने की शक्ति ही मूल जीवन-शक्ति है, जो उधार लेने में थक चुके हैं, मैदान छोड़ गये हैं वे जीवन की व्यर्थता भी समझ गये हैं । कुछ सिर्फ इस भ्रम में जी रहे हैं कि वे उधार वसूल कर लेंगे और कुछ तय किए हुए हैं कि वे मरते दम तक नहीं देंगे। उनका जीवन सफल है।

हर पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी के नाम कुछ क़र्ज़ छोड़ गयी है और हर नयी पीढ़ी ने पुरानी पीढ़ी का क़र्ज़ चुकाने से साफ इन्कार कर दिया है। मूल्य बदल गये हैं, अतः भाड़ में जाओ । कौन देता है? बिल्कुल नहीं। उधार नहीं लौटाना परम्परा से विद्रोह है। परम्परा है उधार देना । विद्रोह की भी चूँकि एक परम्परा चली आई है अतः

हाथ फैलाने, मुट्ठी बाँधने और अंगूठा दिखाने का यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। हम सिर से पैर तक क़र्ज़ में डूबे रहते हैं पर क्या मछली को आप पानी में डूबी कह सकते हैं ? वही तो उसका जीवन है। हमें कर्ज के इस पानी से निकालो तो हम तड़पने लगेंगे। हम फिर पानी में कूदेंगे यानी क़र्ज़ ले लेंगे ।

कोई भी उधार कुछ विशेष सन्दर्भ में उधार रहता है। नये परिप्रेक्ष्य में वह उधार नहीं रहता। उधार लेने वाले ही जीवन में कुछ कर सकते हैं , इतिहास में उनका ही नाम प्रसिद्ध है। उधार लौटाने वाले परिहास के पात्र हैं वे जीवन में कुछ नहीं कर पाते, क्योंकि वे धारा के विरुद्ध तैरने का प्रयास करते हैं । उधार ही वह धारा है जो सतत चली आ रही है और हमारे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन के खेत उससे लहलहा रहे हैं । यह जीवनधारा है। इस देश में उधार के लिए सबसे अच्छी परिस्थितियाँ हैं, क्योंकि यहाँ पुनर्जन्म के सिद्धांत पर विश्वास है। आदमी जानता है कि अगर इस जन्म में नहीं चुका सके तो अगले जन्म में चुका देंगे । ऐसी 'क्रेडिट फेसिलिटी' किस धर्म में मिली होगी ? आत्मा स्थायी पूँजी है जो अमर है। इसकी साख पर हम कोई भी सौदा कर सकते हैं । शरीर एक बटुआ है जो सिक्के लेता-देता रहता है। महत्त्व बटुए का नहीं, उस लेन-देन की प्रथा का है। प्रथा बनी रही तो बटुए तो नये आते रहेंगे ।

कुछ लोग क़र्ज़ को भार मानते हैं। वे खुद को धोखा देते हैं । वे यह बताना चाहते हैं कि वे शरीफ है क्योंकि वे कर्ज को भार मानते हैं । अपनी शराफत का प्रदर्शन करते और उधार लेना चाहते हैं। आदमी लाइटवेट चैम्पियन से ही हेवीवेट चैम्पियन बनता है। आज जिसने सौ रुपये कर्ज लिया है वह कल हजार लेगा। कर्ज आदमी को उत्साहित करता है। वह भार नहीं है, वह तो गैस का बड़ा गुब्बारा है, जो हमें भूमि से आकाश की सैर कराता है। गुब्बारा कितना ही बड़ा हो भार नहीं होता।

उधार लेने वाला अन्वेषी होता है और अन्वेषी ही उधार ले सकता है। हमारे देश में कोलम्बस की प्रतिमा लगानी चाहिए। वह अमरीका नहीं खोजता तो हम कहाँ से कर्ज लेते। यों भी कर्ज में दबा आदमी नयी गलियाँ, नयी सड़कें खोजता है। उन नये मार्गों से वह नये उधार प्राप्त करता है। यही विकास है। हम भी नयी राह खोजेगे, क्योंकि पुरानी राहों से गुजर मुश्किल है। इसे नीति का परिवर्तन कहिए या समय की माँग। विस्फारित दृष्टि से हम संसार की ओर देख रहे हैं और हमें सम्भावनाओं से परिपूर्ण देश और द्वीप नजर आता है। उधार की सीमा आकाश है, चाँद है, तारे हैं, हमें मिलेगा मिलता रहेगा। देखो, वह चाँद की ओर एक राकेट चला। कोई इसमें किसी भारतीय को बिठा दे। वे कुछ लेकर आयेंगे, ओह! यह सृष्टि कितनी सुखमय है। यह आकाश कितना असीम फैला है और फ़िलहाल हमें थोड़ा सा कर्ज चाहिए ।

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यह पाठ किन लोगों को लक्ष्य करके लिखा गया है ?
2. लेखक के अनुसार मनुष्य और पशु में क्या अंतर है?
3. लेखक ने इस पाठ में 'अन्वेषी' किसे कहा है?
4. मानव जाति किन दो भागों में बँट गई है?
5. अमेरिका की खोज किसने की थी?
6. कर्ज से दबा हुआ आदमी क्या खोजता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने उधार लेने को आशावादिता का प्रमाण क्यों कहा है?

2. व्यक्ति 'लाइट वेट' चैम्पियन से कब हेवीवेट चैम्पियन बनता है?

3. किसी भारतीय को चाँद पर भेजने के पीछे लेखक का क्या आशय है?

4. लेखक के अनुसार उधार लौटाने वाले परिहास के पात्र क्यों होते हैं ?

5. हमें कर्ज के पानी से निकालो तो हम तड़पने लगेंगे का अर्थ बताइए ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. क्रेडिट फेसिलिटी से लेखक का क्या आशय है?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए ।

   ''हम सिर से पैर तक कर्ज में डूबे रहते हैं पर क्या मछली को आप पानी में डूबी कह सकते हैं । वही तो उसका जीवन है। हमें कर्ज के इस पानी से निकालो तो हम तड़पने लगेंगे । हम फिर पानी में कूदेंगे यानी कर्ज ले लेंगे।''

   ''उधार की सीमा आकाश है, चाँद हैं, तारे हैं, हमें मिलेगा, मिलता रहेगा। देखो वह चाँद की ओर एक रॉकेट चला। कोई इसमें किसी भारतीय को बिठा दे।''

3. उधार का अनन्त आकाश में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ।

4. ''ओह! यह सृष्टि कितनी सुखमय है, यह आकाश कितना असीम फैला है और फिलहाल हमें थोड़ा-सा कर्ज चाहिए।'' इस पंक्ति की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

भाषा अध्ययन

1. **पाठ में बड़ी-छोटी, सुख-दुःख शब्द आए हैं। आप भी ऐसे पाँच शब्द सोचकर लिखिए, जिनमें किसी शब्द का विलोम शब्द शामिल हो एवं उन्हें लिखकर उनके वाक्य बनाइए।**

2. **नीचे नाक से संबंधित कुछ मुहावरे दिए गए हैं इनके अर्थ समझकर प्रत्येक मुहावरे से वाक्य बनाइए :-**

   (अ) नाकों चने चबाना
   (ब) नाक में दम करना
   (स) नाक रखना
   (द) नाक ऊँची करना
   (य) नाक नीची करना
   (च) नाक-भौं एक करना
   (छ) नाक चढ़ाना

3. **निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए :**

   सिर्फ, कर्ज़, इन्कार, शरीफ़, शराफ़त, खुद।

4. **'सूझ-बूझ', 'एक-दूसरे' जैसे शब्द-युग्मों में योजक चिह्न का प्रयोग हुआ है। इस पाठ से योजक चिह्न वाले अन्य शब्द युग्म ढूँढ़कर लिखिए।**

5. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके लिखिए –**

राष्ट्रीय, आशावादिता, व्यर्थता, परिहास, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, परिस्थिति, परिपूर्ण।

6. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**

जीवन, सफल, आशा, पुरानी, प्रसिद्ध, आकाश

7. **वह धन्य, धान्य से सम्पन्न था तथा अन्य क्षेत्र में अन्न का व्यापार करता था।**

ऊपर लिखे रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते लगते हैं पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे इसी तरह कुछ समरूपी शब्द दिए गए हैं, वाक्य बनाकर उनके अर्थ स्पष्ट कीजिए :

ओर–और, अंश–अंस, भवन–भुवन, में–मैं, सकल–शक्ल

योग्यता विस्तार :

1. व्यंग्य कविता खोजकर लिखिए एवं विद्यालय की दीवाल पर चिपकाइए।
2. 'कर्ज लेने की प्रवृत्ति का आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है' इस विषय पर चर्चा कीजिए।
3. मध्यप्रदेश के व्यंग्यकारों की सूची बनाइए एवं शिक्षक को दिखाइए।
4. हाथ व कान से सम्बन्धित अन्य मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए।

शब्दार्थ

परम्परा – रीति, कर्ज़ – उधार, परिप्रेक्ष्य – संदर्भ में, अन्वेषी – खोजने वाला,

असीम – सीमा रहित, प्रतिमा– मूर्ति, विस्फारित – आश्चर्य जनक

* * *